समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संघर्षवाद I

(Sociological Theory: Conflict Theory I)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

संघर्षवाद क्या है?

- प्रकार्यवाद का विकल्प
- मैक्रो समाजशास्त्रीय सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य
- सामाजिक वर्गों के मध्य शक्ति/ सत्ता की विविधता
- विशिष्ट हितों के आधार पर तथा संसाधनों की प्राप्ति हेतु संघर्ष
- हित समूह दूसरों पर लाभ/ आधिपत्य प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हैं।

संघर्षवाद

- इस सिद्धांत के समर्थकों की मान्यता है कि समाज में परिवर्तन का कारक द्वंद्व है। इसके प्रमुख समर्थकों में कार्ल मार्क्स, जॉर्ज सिमेल, राल्फ डेहरेनडॉर्फ, लुडविग गुंप्लोविज, लेविस कोजर, सी. राइट मिल्स तथा रेंडाल कॉलिन्स हैं।
- संघर्ष सिद्धांत यह मानता है कि सामाजिक व्यवस्था को सर्वसम्मति और अनुरूपता के बजाय वर्चस्व और शक्ति द्वारा बनाए रखा जाता है।
- संघर्ष सिद्धांत के अनुसार, जिनके पास धन और शक्ति है, वे इसे किसी भी तरह से पकड़ने की कोशिश करते हैं, मुख्यतः गरीबों और शक्तिहीनों का दमन करके।
- संघर्ष सिद्धांत का एक मूल आधार यह है कि समाज के भीतर व्यक्ति और समूह अपने स्वयं के धन और शक्ति को अधिकतम करने का प्रयास करेंगे।

संघर्षवाद की मान्यताएँ

- संघर्ष सिद्धांत सीमित संसाधनों पर समाज के भीतर समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित है।
- संघर्ष सिद्धांत सामाजिक और आर्थिक संस्थानों को समूहों या वर्गों के बीच संघर्ष के उपकरण के रूप में देखता है, जिसका उपयोग असमानता और शासक वर्ग के प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए किया जाता है।
- मार्क्सवादी संघर्ष सिद्धांत समाज को सर्वहारा मजदूर वर्ग और बुर्जुआ शासक वर्ग के बीच आर्थिक वर्ग की तर्ज पर विभाजित के रूप में देखता है।
- संघर्ष सिद्धांत के बाद के संस्करण पूंजीवादी गुटों और विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और अन्य प्रकार के समूहों के बीच संघर्ष के अन्य आयामों को देखते हैं।

संघर्षवाद

- संघर्ष सिद्धांत ने युद्ध, क्रांति, गरीबी, भेदभाव और घरेलू हिंसा सहित सामाजिक घटनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला की व्याख्या करने की मांग की है।
- यह मानव इतिहास के अधिकांश मूलभूत विकासों, जैसे लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों को जनता को नियंत्रित करने के पूंजीवादी प्रयासों (सामाजिक व्यवस्था की इच्छा के विपरीत) के लिए जिम्मेदार ठहराता है।
- संघर्ष सिद्धांत के केंद्रीय सिद्धांत सामाजिक असमानता, संसाधनों के विभाजन और विभिन्न सामाजिक आर्थिक वर्गों के बीच मौजूद संघर्षों की अवधारणाएं हैं।
- संघर्ष सिद्धांत के केंद्रीय सिद्धांत पूरे इतिहास में कई प्रकार के सामाजिक संघर्षों की व्याख्या कर सकते हैं।
- कुछ सिद्धांतवादी मानते हैं, जैसा कि मार्क्स ने किया था, कि सामाजिक संघर्ष वह बल है जो अंततः समाज में परिवर्तन और विकास को प्रेरित करता है।

संघर्षवाद: प्राथमिक धारणाएँ

वर्तमान संघर्ष सिद्धांत में चार प्राथमिक धारणाएं हैं जो समझने में सहायक हैं:

- प्रतिस्पर्धा
- क्रांति
- संरचनात्मक असमानता
- युद्ध

संघर्षवाद

- संघर्ष सिद्धांत का केंद्रीय विचार है कि समाज में होने वाले अधिकतम संघर्षों का कारण विभिन्न सामाजिक वर्गों व समूहों में होने वाला द्वंद्व है।
- प्रत्येक समूह अधिक संसाधनों को संकलित करने के लिए संघर्ष करता है, चूंकि संसाधन हमेशा अपर्याप्त होते हैं अतः एक समूह दूसरे समूह से संघर्षरत रहता है।
- प्रत्येक समूह अपने हितों की सुरक्षा करता है तथा दूसरे समूहों की प्रगति को अवरुद्ध करता है।

संघर्षवाद: कार्ल मार्क्स

- मार्क्स के संघर्ष सिद्धांत का संस्करण दो प्राथमिक वर्गों के बीच संघर्ष पर केंद्रित था। प्रत्येक वर्ग में पारस्परिक हितों और संपत्ति के स्वामित्व की एक निश्चित डिग्री से बंधे लोगों का एक समूह होता है।
- मार्क्स ने बुर्जुआ वर्ग के बारे में सिद्धांत दिया, एक ऐसा समूह जो समाज के सदस्यों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके पास बहुसंख्यक धन और साधन हैं। सर्वहारा वर्ग दूसरा समूह है: इसमें वे लोग शामिल हैं जिन्हें मजदूर वर्ग या गरीब माना जाता है।
- पूंजीवाद के उदय के साथ, मार्क्स ने सिद्धांत दिया कि पूंजीपति वर्ग, आबादी के भीतर अल्पसंख्यक, सर्वहारा वर्ग, बहुसंख्यक वर्ग पर अत्याचार करने के लिए अपने प्रभाव का उपयोग करेगा।
- इस तरह की सोच समाज के संघर्ष सिद्धांत-आधारित मॉडल से जुड़ी एक आम छवि से जुड़ी है; इस दर्शन के अनुयायी एक पिरामिड व्यवस्था में विश्वास करते हैं कि समाज में वस्तुओं और सेवाओं को कैसे वितरित किया जाता है।
- पिरामिड के शीर्ष पर अभिजात वर्ग का एक छोटा समूह है जो समाज के बड़े हिस्से के लिए नियम और शर्तों को निर्धारित करता है क्योंकि उनके पास संसाधनों और शक्ति पर बहुत अधिक नियंत्रण होता है।

संघर्षवाद: कार्ल मार्क्स

- समाज के भीतर असमान वितरण को वैचारिक दबाव के माध्यम से बनाए रखने की भविष्यवाणी की गई थी; पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग द्वारा वर्तमान परिस्थितियों को स्वीकार करने के लिए बाध्य करेगा।
- संघर्ष सिद्धांत मानता है कि अभिजात वर्ग कानूनों, परंपराओं और अन्य सामाजिक संरचनाओं की व्यवस्था स्थापित करेगा, ताकि दूसरों को अपने रैंक में शामिल होने से रोकने के दौरान अपने स्वयं के प्रभुत्व का समर्थन किया जा सके।
- मार्क्स ने सिद्धांत दिया कि, जैसा कि मजदूर वर्ग और गरीबों को बदतर परिस्थितियों के अधीन किया गया था, एक सामूहिक चेतना असमानता के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करेगी, और यह संभावित रूप से विद्रोह का परिणाम होगा।
- यदि, विद्रोह के बाद, परिस्थितियों को सर्वहारा वर्ग की चिंताओं के पक्ष में समायोजित किया गया, तो संघर्ष चक्र अंततः दोहराएगा लेकिन विपरीत दिशा में।
- बुर्जुआ वर्ग अंततः आक्रमणकारी और विद्रोही बन जाएगा, जो उन संरचनाओं की वापसी के लिए लोभी होगा जो पहले अपना प्रभुत्व बनाए रखती थीं।

संघर्षवाद: कार्ल मार्क्स

प्रमुख अवधारणाएँ

- द्वंद्वात्मक भौतिकवाद
- ऐतिहासिक भौतिकवाद
- वर्ग संघर्ष का सिद्धांत
- उत्पादन प्रणाली
- अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
- अलगाव
- उत्पादन की एशियाई प्रणाली
- समाजवाद तथा साम्यवाद
- नागरिक समाज
- सामाजिक परिवर्तन का सिद्धांत
- आर्थिक निर्धारणवाद
- श्रम का पण्यीकरण/ वस्तुकरण
- प्रैक्सिस
- अतिरेक जनसंख्या का सिद्धांत

Next Class:

समाजशास्त्रीय सिद्धांत: संघर्षवाद II

(Sociological Theory: Conflict Theory II)